"देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है"

(1:19–51)

अंग्रेज़ी में बच्चों की एक उत्कृष्ट पुस्तक साराह, प्लेन एण्ड टाल (अर्थात साराह, पतली और लम्बी) में मेन नामक स्थान की रहने वाली एक स्त्री की कहानी है जिसने पत्र व्यवहार से पत्नी बनकर प्रेयरी में जाकर रहने का निर्णय लिया। वह स्त्री प्रेयरी में रहने वाले एक विधुर किसान की पत्नी बनने से पहले उससे और उसके लड़के और लड़की से पत्र व्यवहार के द्वारा विचारों का आदान–प्रदान करती थी। उसने उन्हें अपनी बिल्ली और समुद्र के बारे में बताया और उन बच्चों ने पूछा कि क्या उसे बाल बनाना और गाना आता है। उस परिवार के पास जाने का समय निकट आने पर, जिसकी वह सदस्य बनने वाली थी लेकिन उससे कभी मिली नहीं थी, साराह ने लिखा:

> प्रिय जेकब,
>
> मैं रेलगाड़ी से आऊंगी। मैंने पीली टोपी पहनी होगी। मैं पतली और लम्बी हूं।
>
> साराह[1]

रेलगाड़ी से साराह के पहुंचने के दिन की प्रतीक्षा करते हुए आप उनकी उत्सुकता की कल्पना कर सकते हैं? उनके मन में क्या–क्या बातें आ रही होंगी? उस छोटे से नाटक के चार लोगों में से कोई नहीं जानता था कि क्या अपेक्षा करे।

पवित्र शास्त्र के हमारे भाग, यूहन्ना 1:19–51 के आरम्भ में अनिश्चितता और उलझन की ऐसी ही भावना मिलती है। इन घटनाओं में शामिल लोगों के जीवनों में बहुत बड़ी और अच्छी बातें होने वाली थीं, परन्तु वे दुविधा में थे कि उन्हें कैसे ग्रहण करें। यीशु का आना एक ऐसे संसार में हुआ जो किसी की प्रतीक्षा बड़ी उत्सुकता से कर रहा था; परन्तु समस्या केवल यही थी कि लोगों को यह पता नहीं था कि वे वास्तव में किस की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यूहन्ना रचित सुसमाचार का यह भाग हमें इसी उलझन में पड़े लोगों के परिप्रेक्ष्य से दिखाने लगता है कि यह यीशु नासरी वास्तव में कौन था।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की गवाही (1:19-34)

यीशु के यरदन नदी में बपतिस्मा लेने के लिए आने तक, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यहूदिया में काफ़ी हलचल मचा दी थी। फटे-पुराने कपड़े, भविष्यवक्ता जैसा उसका पहरावा और भविष्यवक्ता की तरह ही उसका प्रभावशाली संदेश कि परमेश्वर का राज्य निकट है ''सारे यहूदिया, और यरदन के आस-पास के सारे देश'' के अतिरिक्त यरूशलेम के लोगों को उधर ला रहा था जहां यूहन्ना बपतिस्मा देता था (मत्ती 3:5)। शायद बहुत से लोगों को यह उम्मीद थी कि मसायाह (मसीह) जंगल के बाहर अपने चेलों को इकट्ठा कर रहा है,[2] इसलिए लोग यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में अनुमान लगाने लगे कि वह कौन है। जब उत्सुकता बहुत बढ़ गई, तो यह जानने के लिए कि यूहन्ना अपने बारे में क्या कहता है यहूदियों[3] ने यरूशलेम से कुछ याजकों और लेवियों को भेजा (1:19)।

अपने संदेश तथा बातों से, यूहन्ना बहुत ही स्पष्ट आदमी लगता है जिसने इस बात में कोई संदेह नहीं रहने दिया कि उसके कहने का क्या अर्थ है। यरूशलेम से आए लोगों को उसने बताया कि, ''मैं मसीह नहीं हूं'' (1:20)। इसके अतिरिक्त, उसने ऐलान किया कि वह एलिय्याह[4] या वह नबी नहीं है जिसके विषय में मूसा ने कहा था (1:21; देखें व्यवस्थाविवरण 18:15)। संक्षेप में, वह यह कह रहा था कि मैं वह नहीं हूं जिसकी तुम प्रतीक्षा कर रहे हो। बल्कि यशायाह 40:3 से उद्धृत करते हुए उसने अपने बारे में बताया कि मैं ''जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हूं कि तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो''(1:23)। वह तो केवल एक संदेशवाहक और पूर्ववक्ता था। यूहन्ना के बाद, वह आ रहा था जिसकी वह जूती का बंध खोलने के भी योग्य नहीं था।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला अपनी बात तथा अपने उद्देश्य के प्रति स्पष्ट था। अगले दिन, जब यूहन्ना ने यीशु को आते देखा, तो उसने ऐलान किया, ''देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है!'' (1:29)। बेशक यीशु के बपतिस्मे का सुसमाचार की इस पुस्तक में उल्लेख नहीं है, पर यूहन्ना ने यह बताते हुए कि उसने आकाश से परमेश्वर के आत्मा को यीशु पर ठहरते देखा, इस घटना का हवाला दिया (1:32)। फिर उसने लोगों में माना कि, ''यही परमेश्वर का पुत्र है'' (1:34)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की नज़र में, यीशु परमेश्वर का *कोई* पुत्र नहीं बल्कि परमेश्वर का *यही* पुत्र था। वह परमेश्वर का *कोई* मेम्ना नहीं बल्कि *यह* परमेश्वर का मेम्ना था।

अन्द्रियास की गवाही (1:35-42)

यूहन्ना ने अगले दिन फिर अपने चेलों को यीशु के ''परमेश्वर का मेम्ना'' (1:36) होने की बात बताई और वे यूहन्ना को छोड़कर यीशु के पीछे हो लिए। उनमें से एक अन्द्रियास[5] यह संकेत देते हुए कि वह गुरु-चेले के सम्बन्ध में यीशु के पीछे चलने को तैयार है, उसे ''हे रब्बी'' अर्थात हे गुरु कहने लगा। परन्तु, उसके पीछे चलने का कारण केवल यीशु की बुद्धि से प्रभावित होना ही नहीं था। उसने तुरन्त अपने भाई शमौन पतरस को ढूंढ़कर कहा कि, ''हम को ख्रिस्तुस अर्थात मसीह मिल गया'' (1:41)। पवित्र शास्त्र की

इसी बात से, यीशु को परमेश्वर का मेम्ना, परमेश्वर का पुत्र, रब्बी और मसीह घोषित किया गया था।

फिलिप्पुस और नतनएल की गवाही (1:43-49)

यीशु ने फिलिप्पुस को ''मेरे पीछे हो ले'' के जीवन बदलने वाले शब्दों से बुलाया (1:43)। फिर फिलिप्पुस ने नतनएल को ढूंढ़कर बताया कि जिसकी प्रतिज्ञा मूसा और भविष्यवक्ताओं के द्वारा की गई थी वह उन्हें मिल गया है, वह यूसुफ का पुत्र यीशु नासरी है (1:45)। रूखेपन से पूछते हुए कि, ''क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है?'' (1:46) नतनएल के उत्तर में कोई उमंग नहीं थी। नतनएल प्रभावित तो नहीं हुआ था, परन्तु यीशु को देखने के लिए वह फिलिप्पुस के साथ चला गया। नतनएल के अपने पास आने पर यीशु ने कहा, ''देखो, यह सचमुच इस्राएली है: इस में कपट नहीं'' (1:47)। नतनएल ने हैरान होकर पूछा कि यीशु उसे कैसे जानता था। यीशु के उत्तर ने नतनएल को अन्दर तक हिला दिया। ''उस से पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के तले था, तब मैं ने तुझे देखा था'' (1:48)। शायद नतनएल अंजीर के पेड़ के नीचे मनन या प्रार्थना कर रहा था और यीशु की बात से पता चला कि वह नतनएल के मन की बातों को भी जानता था। नतनएल के बदलने का कारण जो भी रहा हो, परन्तु वह एकदम कठोर और रूखे व्यक्ति से एक जोशीला चेला बन गया जो यह अंगीकार करते हुए उछलता है: ''हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है; तू इस्राएल का महाराजा है''(1:49)।

यीशु और चश्मदीद गवाहों के बीच हुई इस बातचीत से ही, लोग उस प्रकार से वर्णन करने के लिए कि इस व्यक्ति के बारे में उनका क्या विश्वास था, अंधेरे में टटोलने के लिए शब्द ढूंढ़ने लगते हैं। यह तो ऐसा है जैसे वे केवल पांच रंगों (अर्थात ''मेम्ना,'' ''परमेश्वर का पुत्र,'' ''रब्बी,'' ''मसीह,'' ''राजा'') से सूर्यास्त का एक सुन्दर चित्र बनाने का प्रयास कर रहे हों। उनमें से कोई भी उस महिमा के साथ जो उन्होंने देखी थी, न्याय नहीं कर पाता! सबसे महत्वपूर्ण अंगीकार अभी होना था, क्योंकि बाद में यीशु ने अपने ही शब्दों में संकेत दिया था कि वह कौन है (4:26)।

यीशु की गवाही (1:50, 51)

इतनी सी बात कि यीशु ने नतनएल को फिलिप्पुस द्वारा उसे बुलाने से पहले अंजीर के पेड़ के नीचे देखा था पर उसके भावपूर्ण उत्तर से यीशु कुछ हैरान लगा। यीशु ने उसे बताया कि बाद में वह उससे भी बड़े चिह्न देखेगा: ''मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते देखोगे'' (1:51)। उसने कहा, कि स्वर्ग खुलेगा। यूनानी संरचना (पूर्ण कृदंत) में संकेत है कि स्वर्ग खुलना था और खुले ही रहना था। यीशु नासरी यह दावा कर रहा था, कि वह सदा-सदा के लिए स्वर्ग और पृथ्वी के सम्बन्ध को बदल देगा! नतनएल से वह स्वर्ग की एक झलक देखने की प्रतिज्ञा नहीं कर रहा था। वह तो कह रहा था कि उसमें स्वर्ग की महिमा सदा-सदा

के लिए प्रकट होने वाली है। फिर यीशु ने सुसमाचार की पुस्तकों में अपनी सबसे पसन्दीदा व्याख्या ''मनुष्य का पुत्र'' का इस्तेमाल अपने लिए किया। पुराने नियम में इस दिलचस्प अभिव्यक्ति की महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि मिलती है। लगता है कि यीशु ने इसका इस्तेमाल मुख्यत: इसलिए किया क्योंकि भविष्यवाणी की भाषा का केवल यही एकमात्र टुकड़ा था जो उसके समय के सामान्य दुरुपयोग से दूषित नहीं हुआ था। ''मसायाह'' और ''इस्राएल का राजा'' दोनों का ही सैनिक अर्थ निकलता था, जिन्हें वह अपने ऊपर लागू नहीं करना चाहता था, और अन्य सभी पदनाम इस बात की केवल आंशिक व्याख्या ही करते थे कि यीशु नासरी कौन है और संसार में किस लिए आया। इसीलिए यीशु ने अपने आपको ''मनुष्य का पुत्र'' कहा। इस वाक्यांश में एक साथ ही उसकी ईश्वरीयता और उसके मनुष्य होने की तरफ संकेत था। इस प्रकार इससे यीशु इस विचार को व्यक्त कर पाया कि वह वही था जिसके आने की बातें भविष्यवक्ताओं ने बताई थीं और इससे उसे अपनी शर्तों के अनुसार अपनी पहचान देने का भी अवसर मिल गया।

सारांश

हम अभी भी यूहन्ना रचित सुसमाचार के आरम्भ में ही हैं, इसलिए ''तू इससे भी बड़े काम देखेगा'' शब्द हम पर भी लागू होते हैं। चाहे हम यीशु को वर्षों से जानते हों, फिर भी हम इनसे भी बड़े काम देखेंगे। चाहे हम तब से बाइबल क्लासों में जा रहे हों जब छह सप्ताह के ही थे, तौभी हम इनसे बड़े काम ही देखेंगे। चाहे हमने मसीही स्कूलों से बाइबल की डिग्रियां पाई हों तौभी हम इनसे बड़े काम ही देखेंगे। यीशु नासरी को जब भी दोबारा देखें, स्वर्ग हमें खुला हुआ ही मिलता है।

किसी भी सम्बन्ध के लिए सबसे बड़ा ख़तरा एक व्यक्ति द्वारा दूसरे को समझना बन्द कर देना है। यह सोचना कि आप दूसरे व्यक्ति को ''अन्दर बाहर से'' अच्छी तरह से जानते हैं, अपने आपको कठोर जागृति के लिए ठहराना है! कोई भी सम्बन्ध एक दूसरे को जानते रहने से ही बना रहता है। जीवन भर एक दूसरे को जानने वाले लोगों या पचास वर्षों से इकट्ठे रह रहे विवाहित दम्पत्ति को अभी भी एक-दूसरे के बारे में बहुत कुछ जानना बाकी है। क्या आप यीशु के बारे में ऐसा सेचते हैं?

पवित्र शास्त्र के जिस भाग का हमने अध्ययन किया है वह हमें स्मरण दिलाता है कि रंगों की हमारी डिबिया बहुत छोटी है अर्थात जिन श्रेणियों में हम यीशु की परिभाषा देते हैं वे कभी पर्याप्त नहीं होंगी। इस अहसास से क्या आप उसकी खोज में लगे रहेंगे? क्या आप उसे हैरान करते रहने की अनुमति देंगे? क्या आप उसके बारे में यह जानते हुए कि कभी-कभी वह आपको डांटेगा और आपकी सुविधाजनक मान्यताओं को चुनौती देगा, उसे पढ़ना जारी रखेंगे? क्या आप यह ज़ोर देने के बजाय कि यीशु आपकी इच्छा के अनुसार बने, स्वयं यीशु को अपने कामों और बातों से अपने बारे में बताने देंगे? आज जीवन में आपका विचार कुछ भी हो, यदि आप सुसमाचार की इस पुस्तक में यीशु के बारे में जानना जारी रखें, ''तो आप इससे भी बड़े काम देखेंगे।''

फिलिप्पुस को बुलाते हुए यीशु ने केवल इतना ही कहा था, ''मेरे पीछे हो लो।'' फिलिप्पुस के जीवन में उस समय बहुत सी बातें ऐसी थीं, जिन्हें वह यीशु के बारे में नहीं समझता था या बहुत कम समझता था। फिर भी वह पीछे हो लिया और चलते हुए, धीरे-धीरे उसे समझ आने लगा कि यीशु कौन है। यदि हम यीशु को समझना चाहते हैं, तो हमें उसके पीछे चलना होगा; क्योंकि उसके पीछे चलकर ही हम उसे समझ सकते हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]पेट्रिसिया मैकलेक्लन, *साराह, प्लेन एण्ड टॉल* (न्यूयॉर्क हार्पर ट्रॉफी, 1985), 15. [2]देखें प्रेरितों 21:38. [3]सुसमाचार की इस पुस्तक से प्रचार करते समय ''यहूदियों'' अभिव्यक्ति की परिभाषा बड़ी सावधानी से की जानी चाहिए। स्पष्टत:, यहां इस शब्द का इस्तेमाल पूरी कौम के लिए नहीं है, क्योंकि यीशु और उसके चेले भी यहूदी ही थे। ''यहूदियों'' की सबसे अच्छी परिभाषा ''यरूशलेम के यहूदी अगुओं'' के रूप में लगती है, जिन्हें किसी भविष्यवक्ता द्वारा लोगों में विद्रोह करवाने पर सबसे अधिक हानि होनी थी। [4]देखिए मलाकी 4:5. मत्ती 11:14 में यीशु ने कहा कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला एलिय्याह *था* जिसकी बात मलाकी ने की थी। यूहन्ना 1:21 में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला अपने विषय में कही गई यीशु की बात का विरोध नहीं कर रहा था, बल्कि इस मूल विचार को नकार रहा था कि वह मृतकों में से जी उठा, पुराने नियम वाला एलिय्याह है। [5]सुसमाचार की पुस्तकों में अन्द्रियास को एक शांत चरित्र वाला दिखाया गया है; फिर भी यूहन्ना रचित सुसमाचार में तीनों बार जब भी वह आता है, यीशु के पास किसी न किसी को ला ही रहा होता है। पहले पतरस को (1:41, 42); फिर उस लड़के को जिसके पास रोटियां और मछली थी (6:8, 9); अन्त में, यूनानी लोगों को (12:20-22)।